हिन्दी व्याकरण (कक्षा–6)

1 भाषा, लिपि और व्याकरण

➡ आओ कुछ बताएँ

- (क) हमारे क्षेत्र में बुंदेलखंडी बोली जाती है। (छात्र अपने क्षेत्र की बोली लिखें)

  (ख) हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को मनाया जाता है।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) बोली

   (ख) (ii) 22

   (ग) (iii)14 सितम्बर को

2.

	(अ)	**(ब)**
(क)	पंजाबी	(ii) गुरुमुखी
(ख)	हिंदी	(iv) देवनागरी
(ग)	अंग्रेजी	(v) रोमन
(घ)	भाषा का प्राचीनतम रूप	(iii) मौखिक भाषा
(ङ)	उर्दू	(i) फारसी

3. (क) हमारी राजभाषा **हिंदी** है।

   (ख) भाषा लिखने की विधि को **लिपि** कहते हैं।

   (ग) हिंदी भाषा की लिपि **देवनागरी** है।

   (घ) भाषा के दो रूप हैं, लिखित तथा **मौखिक**।

   (ङ) भाषा विचारों के आदान-प्रदान का **साधन** है।

➡ क्रियाकलाप

नेपाली, हिंदी,
पंजाबी, तमिल,
गुजराती, मराठी,
अंग्रेजी, फ्रेंच,
चीनी, जर्मन

❊❊

2 वर्ण–विचार

➡ आओ कुछ बताएँ

- (क) दु:ख, अत:

  (ख) जिन वर्णों का उच्चारण करते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती, स्वर कहलाते हैं। जबकि जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्रतापूर्वक नहीं किया जा सकता, जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, व्यंजन कहलाते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) वर्ण

   (ख) (iii) उष्म

2. (ख) क् + ष = कक्षा, रक्षा

   (ग) त् + र = त्रिशूल, त्रय

   (घ) ट् + ठ = चिट्ठी, खट्टा

   (ङ) ध् + य = ध्यान, मध्या

   (च) स् + न = स्नेह, स्नान

3. (क) हिंदी वर्णमाला में **11** स्वर तथा **33** व्यंजन होते हैं।

   (ख) मूल ध्वनि की वह छोटी-से छोटी इकाई, जिसके टुकड़े न किए जा सकें **वर्ण** कहलाती है।

   (ग) कुछ व्यंजनों के संयोग से बना व्यंजन **संयुक्त** व्यंजन कहलाता है।

   (घ) कुछ व्यंजनों के अंत में एक खड़ी रेखा का प्रयोग होता है, जिसे **पाई** कहते हैं।

4. **अनुस्वार** | **अनुनासिक**

अनुस्वार	**अनुनासिक**
ठंड	चाँद
चंदन	गाँव
कंधा	दाँत
बंदर	आँख

5. (क) भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है। वर्ण दो प्रकार के होते हैं – स्वर और व्यंजन।

(ख) जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वायु मुख के किसी-न-किसी भाग से टकराकर या रुककर बाहर आती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजनों का उच्चारण स्वतंत्रतापूर्वक नहीं किया जा सकता है। इनके उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। भेद – स्पर्श, अंतस्थ, उष्म, संयुक्त।

(ग) दो व्यंजनों के ऐसे मेल को जिससे बने व्यंजन में उन व्यंजनों की पहचान बिल्कुल समाप्त हो जाए, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं; जैसे – कक्षा, ज्ञानी, त्रिशूल, श्रमिक।

(घ) किसी भी शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। उदाहरण – राजा = र् + आ + ज् + आ

➡ **क्रियाकलाप**

(क) गुजराती – ग् + उ + ज् + अ + र् + आ + त् + ई।

(ख) समाधान – स् + अ + म् + आ + ध् + आ + न् + अ।

(ग) मानक – म् + आ + न् + अ + क् + अ।

(घ) नाटक – न् + आ + ट् + अ + क् + अ।

(ङ) मलयालम – म् + अ + ल् + अ + य् + आ + ल् + अ + म् + अ।

❋ ❋

3 शब्द-विचार

➡ **आओ कुछ बताएँ**

- (क) ये शब्द तुर्की भाषा के हैं।

  (ख) कर्पूर – कपूर

➡ **आओ कुछ करें**

1. (क) (ii) शब्द

   (ख) (iii) गर्दभ

   (ग) (ii) तीन

2. (क) जिन शब्दों में कोई विकार उत्पन्न नहीं होता उन्हें **अविकारी** कहते हैं।

   (ख) **वर्णों** के मेल से शब्द का निर्माण होता है।

   (ग) शब्दों के मेल से **वाक्यों** का निर्माण होता है।

   (घ) **शब्दों** को वाक्य में प्रयोग किया जाता है।

3. (क) एक या एक से अधिक वर्णों के निश्चित क्रम से बनी सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है।

   (ख) शब्दों को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

   1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद
   2. रचना के आधार पर शब्द-भेद
   3. अर्थ के आधार पर शब्द-भेद
   4. प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद

   (ग) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को चार भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) तत्सम शब्द
(ii) तद्भव शब्द
(iii) देशज अथवा देशी शब्द
(iv) विदेशज अथवा विदेशी शब्द

(घ) संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में ज्यों-के-त्यों प्रयोग होने वाले शब्द तत्सम तथा जो शब्द थोड़े से परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रयोग होते हैं, वे तद्भव कहलाते हैं।

उदाहरण- तत्सम	तद्भव
ग्राम	गाँव
कूप	कुआँ
दुग्ध	दूध

➡ क्रियाकलाप

1. टमाटर
2. विकार
3. रविवार
4. कपूर
5. कक्षा

⁂

4 संधि

➡ आओ कुछ बताएँ

- (क) पर्वतारोही - पर्वत + आरोही
  हिमालय - हिम + आलय
  (ख) जगत् + ईश = जगदीश
  सत् + मार्ग = सन्मार्ग

➡ आओ कुछ करें

1. (क) सूर्य + उदय - सूर्योदय
   (ख) विद्या + आलय - विद्यालय
   (ग) महा + औषध - महौषध
   (घ) भो + अन - भवन
   (ङ) पर + अधीन - पराधीन
   (च) शास्त्र + अर्थ - शास्त्रार्थ
2. (क) स्वागत - सु + आगत
   (ख) उज्ज्वल - उत् + ज्वल
3. (क) दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार संधि कहलाता है।
   उदाहरण - सूर्योदय = सूर्य + उदय
   (ख) संधि के तीन भेद होते हैं।
   (ग) जब दो स्वरों के परस्पर मिलने से विकार उत्पन्न होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं; जैसे- सदा + एव = सदैव,
   सु + आगत = स्वागत
   (घ) संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को यदि फिर से अलग-अलग कर दिया जाए, तो यह प्रक्रिया 'संधि-विच्छेद' कहलाती है।

➡ क्रियाकलाप

विच्छेद	संधि	संधि का नाम
(क) नै + अक	नायक	अयादि संधि
(ख) वसंत + उत्सव	वसंतोत्सव	गुण संधि
(ग) राम + अवतार	रामावतार	दीर्घ संधि
(घ) रेखा + अंकित	रेखांकित	दीर्घ संधि

⁂

5 समास

➡ आओ कुछ बताएँ

- (क) इसे छोटा करना या संक्षिप्त करना कहलाता है।
  (ख) सामासिक पद के दो भाग होते हैं—
  पूर्वपद, उत्तरपद

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (i) बहुव्रीहि
   (ख) (i) द्विगु
   (ग) (ii) द्वंद्व समास
2. मिलान कीजिए (समस्तपद से समास)—

समस्तपद	समास
(क) यथाशक्ति	(ii) अव्ययीभाव
(ख) गजानन	(i) बहुव्रीहि
(ग) दिन-रात	(iii) द्वंद्व
(घ) प्रतिदिन	(ii) अव्ययीभाव
(ङ) सुख-दु:ख	(iii) द्वंद्व
(च) दशानन	(i) बहुव्रीहि

3. (क) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाले सार्थक शब्द की प्रक्रिया समास कहलाती है।
   (ख) समास के छह भेद होते हैं
   1. अव्ययीभाव समास
   2. तत्पुरुष समास
   3. कर्मधारय समास
   4. द्विगु समास
   5. द्वंद्व समास
   6. बहुव्रीहि समास

   (ग) सामासिक पद का पहला पद पूर्वपद तथा बाद वाला पद उत्तरपद कहलाता है— उदाहरण

सामासिक पद	पूर्वपद	उत्तरपद
राजा-रानी	राजा	रानी

   (घ) समस्तपदों को अलग-अलग करना समास-विग्रह कहलाता है।

➡ क्रियाकलाप

शब्द	समास का नाम
(क) आजीवन	अव्ययीभाव समास
(ख) गंगाजल	संबंध तत्पुरुष समास
(ग) शरणागत	कर्म तत्पुरुष समास
(घ) जन्म-मरण	द्वंद्व समास
(ङ) तिरंगा	द्विगु समास

❊❊

6 उपसर्ग

➡ आओ कुछ बताएँ

- (क) मूल शब्दों के पहले जुड़ने वाला शब्द उपसर्ग कहलाता है।
  (ख) अन् - उपसर्ग

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (i) व (ii) दोनों
   (ख) (i) व (ii) दोनों
   (ग) (ii) अभि
2.

उपसर्ग	मूल शब्द
(क) पर	देश
(ख) सत्	मार्ग
(ग) सु	योग
(घ) दुष्	कर्म

3. (क) उपसर्ग शब्दों के अर्थ में **परिवर्तन** कर देते हैं।
   (ख) उपसर्ग शब्दों के **अंश** मात्र होते हैं।
   (ग) उपसर्गों के प्रयोग से **नवीन** शब्दों का निर्माण होता है।
   (घ) उपसर्ग को **तीन** भागों में बाँटा गया है।
4. (क) जो शब्दांश शब्दों के पहले जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं या उनके अर्थ को बदल देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उदाहरण— अनु + चर - अनुचर

(ख) उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं—
1. संस्कृत के उपसर्ग
2. उर्दू-फारसी के उपसर्ग
3. हिंदी के उपसर्ग

➡ **क्रियाकलाप**

(क) सुपुत्र, कुपुत्र
(ख) अनुराग, विराग
(ग) स्वतंत्र, परतंत्र

❋❋

7 प्रत्यय

➡ **आओ कुछ बताएँ**

- (क) पलटन – 'अन' प्रत्यय
  नाइन – 'इन' प्रत्यय
  घेरा – 'आ' प्रत्यय
  (ख) ईय – भारतीय
  वान – बलवान

➡ **आओ कुछ करें**

1. (क) (ii) प्रत्यय
   (ख) (iii)दंत प्रत्यय
   (ग) (ii) कार

2.
(क) बाजी	कलाबाजी
(ख) फल	सीताफल
(ग) वार	उम्मीदवार
(घ) स्वी	यशस्वी
(ङ) मान	सम्मान
(च) ना	नाचना
(छ) ची	तोपची
(ज) ईला	हठीला
(झ) आनत	जमानत
(ञ) पा	बुढ़ापा

3.
मिलाकर	झूला	मैला
खाकर	पढ़ा	किला
लाकर	तुला	
सोकर	कला	

सार्थक शब्द—

चतुराई, मिलाकर, पढ़ाई, कलाकार, लिखाई, चित्रकार

4. 1. ऐसे शब्दांश जो मूल शब्द के बाद में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे – खेल + ना = खिलौना।
   2. प्रत्यय के दो भेद होते हैं—
      1. कृदंत, 2. तद्धित
   3. वे शब्दांश जो मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं तथा जो शब्दांश मूल शब्द के बाद में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

➡ **क्रियाकलाप**

(क) लिख – लिखाई
(ख) गति – गतिमान
(ग) क्रोध – क्रोधित
(घ) जापान – जापानी
(ङ) चिकना – चिकनाई
(च) जमा – जमानत

❋❋

8 संज्ञा

➡ **आओ कुछ बताएँ**

- (क) खोदना — खुदाई
  थकना — थकावट
  (ख) शीघ्र — शीघ्रता
  निकट — निकटता

➡ **आओ कुछ करें**

1. (क) (iii) व्यक्तिवाचक
   (ख) (i) जातिवाचक
2. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या **अवस्था** के नाम को संज्ञा कहते हैं।
   (ख) संज्ञा के **तीन** भेद होते हैं।
   (ग) जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या **वस्तु** का बोध कराते हैं, उन्हें **व्यक्तिवाचक** संज्ञा कहते हैं।
   (घ) भाववाचक संज्ञा को केवल महसूस ही किया जा सकता है। इसे देखा या छुआ नहीं जा सकता है।
3. (क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण— माता, फल, आगरा, प्रेम।
   (ख) संज्ञा के तीन भेद होते हैं—
   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा,
   2. जातिवाचक संज्ञा,
   3. भाववाचक संज्ञा
   (ग) जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी अथवा स्थान आदि का बोध कराते हैं, वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरण— कुसुम, बुलंद दरवाजा।
   (घ) भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञाओं, सर्वनामों से, विशेषणों से, क्रियाओं से और क्रियाविशेषण से मिलकर होता है।

❊❊

9 संज्ञा के विकार : लिंग, वचन और कारक

1. लिंग

➡ **आओ कुछ बताएँ**

- (क) संज्ञा शब्द स्त्री या पुरुष जाति के अनुसार अपना रूप बदलते हैं जिसे लिंग द्वारा विकार अथवा लिंग आधारित विकार कहा जाता है।
  (ख) कारक के कारण संज्ञा के रूप में होने वाले परिवर्तन को ही कारक द्वारा संज्ञा का विकार कहते हैं।

➡ **आओ कुछ करें**

1. (क) (iii) लिंग
   (ख) (iv) स्त्रीलिंग
2. (क) आज नानी ने हमें राजा और **रानी** की कहानी सुनाई।
   (ख) सम्मेलन में कई लेखक और **लेखिका** शामिल हुए।
   (ग) काली घटा देखकर मोर और **मोरनी** नाचने लगे।
   (घ) मोहिनी के दो पुत्र और एक **पुत्री** हैं।
3. (क) हिंदी भाषा में कुछ ऐसे संज्ञा शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनमें प्रसंग के अनुसार परिवर्तन हो जाता है। ऐसे संज्ञा शब्दों को संज्ञा के विकार कहा जाता है। उदाहरण— लड़का-लड़की।

(ख) शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह शब्द स्त्री-जाति का है या पुरुष जाति का, उसे लिंग कहते हैं। उदाहरण— शेर-शेरनी।

(ग) लिंग के दो भेद होते हैं— स्त्रीलिंग, पुल्लिंग।

➡ क्रियाकलाप

	पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
1.	लुहार	लुहारिन
2.	देव	देवी
3.	नट	नटनी
4.	बैल	गाय
5.	बुद्धिमान	बुद्धिमती
6.	पूज्य	पूजनीया
7.	डिब्बा	डिब्बी
8.	ठाकुर	ठकुराइन
9.	वीर	वीरांगना

2. वचन

➡ आओ कुछ बताएँ

- (क) आकाश, पानी, जनता
  (ख) हस्ताक्षर, आँसू, समाचार

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) वचन
   (ख) (ii) गुरुजन
2. (क) सभी तोते उड़ गए।
   (ख) हॉल में दस दरवाजे हैं।
   (ग) एक वर्ष में बारह मास होते हैं।
   (घ) कारखाने की मशीन खराब हो गई।
   (ङ) आकाश में सूर्य चमक रहा है।
3. (क) धोबी **कपड़ा** धो रहा है।
   (ख) **नदियों** का पानी चढ़ रहा है।
   (ग) पेड़ से **पत्ते** गिर रहे हैं।
   (घ) अध्यापक **बच्चे** को पढ़ा रहे हैं।
   (ङ) **लड़का** पढ़ रहा है।
4. (क) शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक या एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। उदाहरण— सब्जी-सब्जियाँ।
   (ख) वचन के दो भेद होते हैं— एकवचन, बहुवचन।
   (ग) वचन की पहचान मुख्य रूप से दो प्रकार से की जा सकती है—
   1. संज्ञा या सर्वनाम द्वारा → संज्ञा द्वारा → लड़का खेल रहा है। (एकवचन) लड़के खेल रहे हैं। (बहुवचन) सर्वनाम द्वारा → वह गा रहा है। (एकवचन) वे गा रहे हैं। (बहुवचन)
   2. क्रिया पद द्वारा→ राहगीर जा रहा है। (एकवचन) राहगीर जा रहे हैं। (बहुवचन)
   (घ) शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे— लड़के।

3. कारक

➡ आओ कुछ बताएँ

- (क) कर्म कारक में क्रिया भाव का अभाव होता है, जबकि संप्रदान कारक में देने का भाव मुख्य होता है।
  (ख) करण कारक में 'से' किसी साधन से काम करने को दर्शाता है, जबकि अपादान में 'से' अलग होने का भाव प्रकट होता है।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iii) (i) तथा (ii) दोनों
   (ख) (i) कर्ता कारक
2. (क) बंदर पेड़ पर है।
   (ख) पर्वतों का सौंदर्य अद्वितीय है।
   (ग) लड़के दीवार पर कुछ लिख रहे हैं।
   (घ) जरा चाकू से खरबूजा काट दीजिए।

3\. (क) संज्ञा और सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले शब्दों को परसर्ग या कारक कहते हैं। उदाहरण— बंदर **फल को** खाता है।

(ख) कारक के आठ भेद होते हैं—
1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

(ग) जिस शब्द से कार्य अर्थात् क्रिया के करने वाले का ज्ञान होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे—**पुजारी ने** आरती की।

(घ) से, (अलग होने के अर्थ में)

⁂

10 सर्वनाम

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम के मध्यम पुरुष का प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है।

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के अन्य पुरुष का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति के लिए किया जाता है।

➡ आओ कुछ करें

1\. (क) (iii) सर्वनाम

(ख) (iv) ये सभी

2\. (क) भाषा में वक्ता, श्रोता तथा अन्य व्यक्ति के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'पुरुषवाचक सर्वनाम' कहा जाता है, जबकि किसी वाक्य में प्रयुक्त जो सर्वनाम शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों का संबंध उसी के उपवाक्य से जोड़ते हैं, वे संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्रश्न का बोध होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं, जबकि वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(ग) वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, इसके विपरीत वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान नहीं होता है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

3\. (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्रश्न का बोध होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे— तुमने यह पुस्तक **क्यों** फाड़ी है?

(ग) वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान नहीं होता है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे— देखो, नौकर **कुछ** चीज लाया है।

(घ) **(i) उत्तम पुरुष—** वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से वक्ता अर्थात् कहने

वाले का ज्ञान होता है, उन्हें उत्तम पुरुष के सर्वनाम कहते हैं; जैसे— मैं, मेरा, मुझे, हम, हमारे इत्यादि।

(ii) मध्यम पुरुष— वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से श्रोता अर्थात् सुनने वाले का ज्ञान होता है, उन्हें मध्यम पुरुष के सर्वनाम कहा जाता है; जैसे— तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपका आदि।

(iii) अन्य पुरुष— वाक्य में जिन सर्वनाम शब्दों से किसी अन्य व्यक्ति अर्थात् जिसके विषय में कहा जा रहा है, का ज्ञान होता है, उन्हें अन्य पुरुष के सर्वनाम कहते हैं; जैसे— वह, उसका, उसके इत्यादि।

➡ **क्रियाकलाप**

1. निश्चयवाचक सर्वनाम
2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
3. संबंधवाचक सर्वनाम
4. निजवाचक सर्वनाम

❊ ❊

11 विशेषण

➡ **आओ कुछ बताएँ**

(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, आकार, स्थिति, रंग, गंध, अवस्था, स्वाद, स्पर्श आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे— अच्छा, काला, मीठा।

(ख) जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण या मात्रा का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे— पाँच किग्रा। जबकि जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे— दो, चालीस, कुछ।

➡ **आओ कुछ करें**

1. (क) (iii) विशेषण

   (ख) (iii) चार

2. (क) विशेषण शब्द जिससे निश्चित संख्या का ज्ञान होता है, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। इसके विपरीत, जिन विशेषण शब्दों से अनिश्चित संख्या का बोध होता है उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—निश्चित संख्यावाचक विशेषण— पाँच, तीन। अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण— कुछ, कम।

   (ख) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं, जबकि जब कोई सर्वनाम संज्ञा से पहले आकर विशेषण का काम करे, तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

   (ग) जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण या मात्रा का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे— पाँच किग्रा, बहुत। जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे— चार सौ तीस, सभी।

3. (क) (✗)

   (ख) (✓)

4. (क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। उदाहरण—कविता ने लाल फ्रॉक पहन रखी है।

(ख) विशेषण के चार भेद होते हैं—
(1) गुणवाचक विशेषण
(2) परिमाणवाचक विशेषण
(3) संख्यावाचक विशेषण
(4) सार्वनामिक विशेषण

➡ क्रियाकलाप

1.	घमंड	घमंडी
2.	शर्म	शर्मीला
3.	आदर	आदरणीय
4.	बल	बलवान

❊ ❊

12 क्रिया

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) गलत प्रश्न / यह अपने आप में ही उत्तर है, मात्र (बताइए) के स्थान पर (कहा जाता है) लगाना है।

(ख) रामसहाय गधा लाने गया।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) नामधातु
(ख) (i) पूर्वकालिक

2. (क) **सकर्मक क्रिया—** जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग होता है अथवा उसके रहने की संभावना रहती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे— सविता पुस्तक पढ़ती है।

अकर्मक क्रिया— जिस क्रिया का कोई कर्म नहीं होता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे— विशाल सोता है।

(ख) **पूर्वकालिक क्रिया—**वाक्य में जब किसी एक क्रिया को करने के बाद दूसरी क्रिया को करने की बात कही जाती है, तब पहले अर्थात् पूर्व में की गई भूतकाल की क्रिया को ही पूर्व कालिक क्रिया कहते हैं; जैसे— वह बच्चे को पकड़कर चलना सिखाता है।

प्रेरणार्थक क्रिया— जहाँ पर कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य व्यक्ति को प्रेरित करके उससे करवाता है, तो प्रेरणा देकर करवाई गई क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे— आपने यह मूर्ति किससे मँगवाई है?

3. (क) मनीष दूध पीता है — पीता है
(ख) माता जी सिलाई करती हैं — सिलाई करती हैं
(ग) मोनू आम खाता है — खाता है
(घ) विपुल चित्र बनाता है — बनाता है
(ङ) पिताजी बाजार जाते हैं — जाते हैं

4. (क) जिन शब्दों से किसी कार्य के करने, होने, घटना अथवा स्थिति का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे— दो बच्चे **टहल रहे हैं।**

(ख) जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं; जैसे— हँस, गा, सुन आदि। धातु में 'ना' जोड़ देने से क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है; जैसे— हँसना, गाना, सुनना आदि।

(ग) जो क्रिया नाम अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों से प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं। जैसे— राम का **सकपकाना** बताता है कि उसने ही चोरी की है।

(घ) जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे— माताजी **बालक** को **फल** देती हैं।

➡ **क्रियाकलाप**

वाक्य	पूरक शब्द
1. सभी **खिलाड़ी** दुखी थे।	खिलाड़ी
2. मोनिका **लेखिका** है।	लेखिका
3. रोहन **इंजीनियर** है।	इंजीनियर
4. हम **छात्र** हैं	छात्र
5. मैं **विद्यार्थी** हूँ	विद्यार्थी

❊ ❊

13 काल

➡ **आओ कुछ बताएँ**

(क) 1. माता जी खाना पका रही होंगी।
2. राधा बाजार जा रही होगी।

(ख) 1. अगर बालक नहीं सोया, तो माताजी बाजार नहीं जा पाएँगी।
2. यदि उसने ठीक से पढ़ाई नहीं की, तो वह फेल हो जाएगा।

➡ **आओ कुछ करें**

1. (क) (iii) काल
(ख) (iii) तीन

2. (क) वर्षा हो रही थी।
(ख) शायद बच्चा रो रहा था।
(ग) दिव्या वहाँ जा रही थी।
(घ) हमने नृत्य प्रतियोगिता देखी।

3. (क) बच्चे पत्र लिख रहे थे। **भूतकाल**
(ख) कल बैंक बंद होगा। **सामान्य भविष्यकाल**
(ग) बादल गरज रहे हैं। **अपूर्ण वर्तमान काल**
(घ) रीतू आई है। **वर्तमान काल**

4. (क) क्रिया के होने या करने के समय को काल कहते हैं। काल के तीन भेद होते हैं।
(1) वर्तमान काल
(2) भूतकाल
(3) भविष्य काल

(ख) क्रिया के जिस रूप से हमें कार्य के चल रहे समय में होने का ज्ञान होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। वर्तमान काल के तीन भेद हैं—
(1) सामान्य वर्तमान काल
(2) अपूर्ण वर्तमान काल
(3) संदिग्ध वर्तमान काल

(ग) क्रिया के जिस रूप से हमें कार्य के बीते समय में संपन्न होने का ज्ञान होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के छह भेद होते हैं—
(1) सामान्य भूतकाल
(2) आसन्न भूतकाल
(3) पूर्ण भूतकाल
(4) अपूर्ण भूतकाल
(5) संदिग्ध भूतकाल
(6) हेतुहेतुमद् भूतकाल

(घ) क्रिया के जिस रूप से हमें किसी कार्य के आने वाले समय में होने का ज्ञान होता है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। भविष्यत् काल के तीन भेद होते हैं—
(1) सामान्य भविष्यत् काल
(2) संभाव्य अथवा संदिग्ध भविष्यत् काल
(3) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल

क्रियाकलाप

भूतकाल	वर्तमानकाल	भविष्यत् काल
दिनेश बाजार गया।	दिनेश बाजार जाता है।	दिनेश बाजार जाएगा।
छात्र पढ़ रहे थे।	छात्र पढ़ रहे हैं।	छात्र पढ़ेंगे।
सुमन ने एक गीत गाया।	सुमन एक गीत गा रही है।	सुमन एक गीत गाएगी।

❊ ❊

14 वाच्य

आओ कुछ बताएँ

(क) (i) गीता द्वारा पाठ पढ़ा जाता है।
(ii) मोहन द्वारा पत्र लिखा जाता है।

(ख) (i) राधा से गीत नहीं गाया जाता है।
(ii) रमेश से फुटबॉल नहीं खेला जाता है।

आओ कुछ करें

1. (क) (iii) वाच्य
2. (क) मोटे लड़के से दौड़ा नहीं जाता है। भाववाच्य
(ख) हम बाजार जा रहे हैं। **कर्तृवाच्य**
3. (क) क्रिया का वह रूप जिससे यह पता लगता है कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव; वाच्य कहलाता है।
(ख) जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है, वे कर्तृवाच्य कहलाते हैं; जैसे—घोड़े भार ढोते हैं।

क्रियाकलाप

(क) मैं बैठ नहीं सकता।
मुझसे बैठा नहीं जाता है।

(ख) रोहन खाना खा रहा है।
रोहन द्वारा खाना खाया जा रहा है।

(ग) किताब गायत्री द्वारा पढ़ी गई।
किताब गायत्री द्वारा पढ़ी जा रही है।

❊ ❊

15 अव्यय

आओ कुछ बताएँ

(क) (i) वह धीरे-धीरे चलता है।
(ii) खरगोश तेज दौड़ता है।

(ख) समुच्चयबोधक अव्यय के तीन भेद होते हैं—
(i) विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय
(ii) संयोजक समुच्चयबोधक अव्यय
(iii) विकल्पसूचक समुच्चयबोधक अव्यय

आओ कुछ करें

1. (क) (i) अविकारी शब्द
(ख) (iii) संबंधबोधक
2. (क) जो शब्द लिंग, वचन, कारक के कारण अपना रूप नहीं बदलते, उन्हें 'अविकारी शब्द' कहते हैं।
(ख) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया 'विकारी शब्द' हैं।
3. (क) जो शब्द लिंग, वचन, कारक के कारण

अपना रूप नहीं बदलते, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे— राधा जोर-जोर से रोती है।

(ख) अविकारी शब्दों के चार भेद होते हैं—
(i) क्रियाविशेषण अविकारी शब्द
(ii) संबंधबोधक अव्यय
(iii) समुच्चयबोधक अव्यय
(iv) विस्मयादिबोधक अव्यय

(ग) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरण— आज सारा दिन बादल तेज-तेज गरजते रहे।

(घ) वाक्य में जिन शब्दों से संबोधन, आश्चर्य, घृणा, दु:ख, क्रोध, लज्जा, हर्ष, विषाद, भय, आशीर्वाद इत्यादि भावों का ज्ञान होता है, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं।

❊ ❊

16 वाक्य

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) (i) आओ।
(ii) खाओ।

(ख) संयुक्त वाक्य - रात हो गई और सभी सो गए। मिश्रित वाक्य - राधा वृंदावन नहीं जा सकी, क्योंकि उसकी बस छूट गई।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (i) कर्ता
(ख) (iii) तीन

2. (क) शब्दों के सार्थक, क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ढंग से प्रयुक्त समूह को **वाक्य** कहते हैं।
(ख) वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे **उद्देश्य** कहते हैं।
(ग) जिन वाक्यों में शोक, घृणा आदि भावनात्मक आवेग हों, उन्हें **विस्मयादि-बोधक** कहते हैं।
(घ) वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ भी कहा जाए, उसे **विधेय** कहते हैं।

3. (क) शब्दों के सार्थक, क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ढंग से प्रयुक्त समूह को वाक्य कहते हैं। उदाहरण- पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।
(ख) वाक्य के सामान्यत: दो अंग होते हैं—
(i) उद्देश्य
(ii) विधेय
(ग) मिश्रित और संयुक्त वाक्यों में एक से अधिक वाक्य समुच्चयबोधकों द्वारा जुड़े होते हैं। वाक्य में जुड़े ऐसे वाक्यों को उपवाक्य कहते हैं।
(घ) उपवाक्यों के दो भेद होते हैं—
(i) आश्रित उपवाक्य
(ii) स्वतंत्र उपवाक्य

➡ क्रियाकलाप

(क) यदि तुम परिश्रम करोगे, तो तुम सफल होंगे।
(ख) दिव्या कल आई थी, परंतु मुझसे नहीं मिली।

❊ ❊

17 वाक्य शुद्धि

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) वाक्यों में अशुद्धियाँ पाई जाती हैं।

(ख) व्याकरण में आठ कारक होते हैं।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (iv) अशुद्धियाँ

(ख) (iv) वाक्य शुद्धि

2. (क) लड़का पढ़ रहे हैं।
लड़के पढ़ रहे हैं।

(ख) अध्यापक आ गया है।
अध्यापक आ गए हैं।

(ग) रघु ने हस्ताक्षर कर दिया है।
रघु ने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

(घ) नदी बह रहा है।
नदी बह रही है।

3. (क) वाक्य पदक्रम में पहले कर्ता, कर्म और फिर क्रिया का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण— चारा काटकर गाय को खिलाओ।

(ख) वाक्य में कभी-कभी लिंग, वचन, कारक, अव्यय तथा वर्तनी के अशुद्ध प्रयोग के कारण अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

(ग) वाक्य को शुद्ध व सरल बनाने के लिए पदक्रम, प्रयोग और क्रिया रूप पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

➡ क्रियाकलाप

(क) रोहन पेड़ पर गिर गया।
कारक संबंधी अशुद्धि

(ख) विद्यार्थी मैदान में आ रही है।
लिंग संबंधी अशुद्धि

(ग) दीपक की उजाला फैल गया।
संज्ञा संबंधी अशुद्धि

(घ) सुमित, सुमित की पुस्तक पढ़ता है।
सर्वनाम संबंधी अशुद्धि

❊ ❊

18 विराम चिह्न

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) किसी शब्द को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे— उ० प्र० = उत्तर प्रदेश

(ख) जब वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है, तब वाक्य के अंत में प्रश्न चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ग) राजा-रानी दरबार में साथ-साथ आए।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (i) पूर्ण विराम

(ख) (iii) अल्प विराम

2. (क) । = पूर्ण विराम

(ख) ; = अर्द्ध विराम

(ग) : = अपूर्ण विराम

(घ) - = योजक चिह्न

(ङ) — = निर्देशक चिह्न

(च) ० = लाघव चिह्न

3. (क) वाक्यों के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विराम चिह्नों का अत्यधिक महत्व है।

(ख) जहाँ वाक्य में कोई प्रश्न पूछा जाता है,

तो वहाँ वाक्य के अंत में प्रश्न चिह्न लगाया जाता है; जैसे— श्याम विद्यालय **कब** जाता है?

(ग) उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं— (i) "...." (ii) '....'

➡ क्रियाकलाप

भारत एक महान देश है। यहाँ अनेक धर्म, जाति, जनजाति तथा समुदायों के लोग निवास करते हैं। भारतीयों के खान-पान, वेशभूषा, रीति-रिवाजों आदि में भी पर्याप्त भिन्नता है। सभी विभिन्नताओं के बाद भी हम सब एक हैं।

※ ※

19 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

➡ आओ कुछ बताएँ

(क) 'मुहावरे' का अर्थ है— अभ्यास।

(ख) 'लोकोक्ति' का अर्थ है— लोक + उक्ति अर्थात् संसार में प्रसिद्ध कहावत।

➡ आओ कुछ करें

1. (क) (ii) बुद्धि भ्रष्ट होना

(ख) (ii) अचानक बहुत बड़ी वस्तु मिलना

2. (क) कक्षा में प्रथम आने पर गौरव **फूला न समाया**।

(ख) मनीष अपनी माँ की **आँखों का तारा** है।

(ग) नौकर द्वारा चोरी किए जाने पर शर्मा जी **आग बबूला** हो गए।

(घ) युवाओं ने आरक्षण के विरुद्ध **आवाज** उठाई।

3. (क) गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास

(ख) जिसकी उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई।

(ग) अंधे के हाथ बटेर लगना।

(घ) थोथा चना बाजे घना।

➡ क्रियाकलाप

(क) जल में रहकर मगर से बैर— संपभु से शत्रुता।

वाक्य— रामजीलाल ने सबको समझाया कि अफसर से झगड़ा मत करो; क्योंकि जल में रहकर मगर से बैर नहीं किया जाता है।

(ख) घर का भेदी लंका ढाए— आपसी फूट का परिणाम बुरा होता है।

वाक्य— मोहन ने अपने परिवार के सभी भेद एक ऐसे व्यक्ति को बता दिए, जिसे नहीं बताने चाहिए थे, और उसने उनकी कमजोरियों का खूब फायदा उठाया। यह तो वही बात हुई घर का भेदी लंका ढाए।

(ग) काला अक्षर भैंस बराबर— अनपढ़

वाक्य — मोहन तो पूरी तरह से अनपढ़ है, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

(घ) एक पंथ दो काज— एक प्रयत्न से दो काम सिद्ध होना।

वाक्य— मैं पहले बैंक जाऊँगा और लौटते समय बाजार भी होता आऊँगा, इस प्रकार एक पंथ दो काज हो जाएँगे।

※ ※

20 अपठित गद्यांश

➡ आओ कुछ बताएँ

1. (क) (i) **अर्थ**- जो व्यक्ति अत्यंत कठिन परिश्रम करता है और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद, बिना हार माने अपने लक्ष्य अथवा कार्य पर अडिग रहता है। यह वाक्य दृढ़निश्चय के साथ अपने कर्म में लीन रहने वाले व्यक्ति की अटूट मेहनत को दर्शाता है।

(ii) **अर्थ**—परिश्रमी व्यक्ति अपनी मेहनत, दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास के दम पर आत्मनिर्भर बनता है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर न रहकर स्वयं अपना सहारा बनता है। वह जीवन की चुनौतियों का बहादुरी से सामना करता है।

(ख) **सारांश**- जीवन का वास्तविक सुख कड़ी मेहनत और आत्मनिर्भरता में निहित है। जो व्यक्ति कर्मठ है, वह अपनी भुजाओं के बल पर स्वयं अपना भाग्य लिखता है, जिससे चिंताएँ और हीनता उससे दूर रहती हैं। मेहनती व्यक्ति न केवल आत्मनिर्भर बनता है, बल्कि कठिन परिस्थितियों को भी सुगमता से हल करने की क्षमता रखता है।

(ग) परिश्रमी व्यक्ति अपनी मेहनत पर विश्वास रखता है और आत्मनिर्भर बनता है। उसका विश्वास है कि वह अपनी 'मजबूत भुजाओं' से अपना भाग्य स्वयं बना सकता है, इसलिए वह किसी के सामने अपनी हीनता का प्रदर्शन करना उचित नहीं समझता है।

(घ) **शीर्षक** - परिश्रम का सच्चा सुख / परिश्रम का महत्त्व

2. (क) **शीर्षक**— राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी / युगपुरुष गाँधी

(ख) (i) **अर्थ**- शीशे के समान स्वच्छ, पवित्र, निष्कलंक और पारदर्शी होना।

(ii) मानवता के पुजारी— **अर्थ**- ऐसा व्यक्ति जो नि:स्वार्थ भाव से मानव सेवा, करुणा, प्रेम और सहानुभूति को ही अपना सर्वोच्च धर्म मानता है।

(iii) राष्ट्रीयता के प्रथम अग्रदूत— **अर्थ**- वह व्यक्ति जिसने देश में पहली बार एकता, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय-चेतना (राष्ट्रवाद) की भावना को जन्म दिया या उसका संदेश फैलाया।

(iv) भौतिक शरीर आज हमारे बीच नहीं है—**अर्थ**- वह व्यक्ति (गाँधी जी) अब इस दुनिया में जीवित नहीं है, उनकी मृत्यु हो चुकी है।

(ग) आज सारा विश्व महात्मा गाँधी का यशोगान कर रहा है।

3. (क) नहीं, हम आकाश की विशालता और महानता की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

(ख) रात में चमकते, झिलमिलाते अनगिनत छोटे-छोटे प्रकाश के बिंदु अर्थात् तारे क्या हैं, ये हमें केवल रात में ही क्यों दिखाई देते हैं? रात की सुंदरता को बढ़ाने के लिए ये कहाँ से आते हैं?

(ग) **शीर्षक**— आकाश की अनंतता और स्थिरता का सौंदर्य

4. (क) आषाढ़ की रिमझिम और किसान का उत्सव

(ख) **भाव**— प्रस्तुत पंक्ति का भाव है कि

भविष्य में जब फसल कटकर खलिहान में आएगी, तब गरीबी और ऋण के कारण होने वाली पीड़ा के लिए रोने का समय होगा, लेकिन अभी जब वर्षा हो रही है और खेत लहलहा रहे हैं तो उस पल में दु:ख भूलकर किसानों को खुशियाँ मनाने और हर्षोल्लास मनाने दिया जाए।

भावार्थ— महिला कृषक कहती है कि आषाढ़ की रिमझिम बारिश में बादलों को खेतों में बरसने दिया जाए, जिससे हरियाली आए। इस माहौल में कृषक वधुएँ अपने भोले-भाले गीत गाएँ। और जो लोग दुखी हैं, उन्हें भी इस एकमात्र उत्सव में शामिल होकर खुशियाँ मनाने दो।

5. (क) (i) देता वही प्रकाश, आग में जो अभीत जलता है। **अर्थ** - इसका अर्थ है, जो कठिनाइयों, संघर्षों और विपरीत परिस्थितियों से डरे बिना उनमें तपकर निखरता है।

(ii) सबसे बड़ी जाँच है, व्रत का अंतिम मोल चुकाना। **अर्थ** - इसका अर्थ है, अपने प्रण को निभाते हुए अंत तक संघर्ष करना, चाहे इसके लिए प्राणों की आहुति क्यों न देनी पड़े।

(ख) **भाव** - उपर्युक्त पद्यांश का भाव है कि मनुष्यता का आदर्श तपस्या, कष्ट और संघर्षों के बीच विकसित होता है। महान बनने के लिए जीवन में अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ता है। प्रतिज्ञा करना आसान है, लेकिन उसे अंत तक निभाना ही सर्वोच्च बलिदान और वीरता है। यदि अपने प्राणों का मोह आड़े आए, तो प्रण लेने का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

❊ ❊

21 पत्र-लेखन

➡ आओ कुछ करें

(क) स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर निगम, झाँसी
उत्तर प्रदेश।

दिनांक : 09 फरवरी 20--

विषय: शिवाजी नगर कॉलोनी में व्याप्त गंदगी की सफाई हेतु।

महोदय/महोदया,

सविनय निवेदन यह है कि मैं शिवाजी नगर कॉलोनी का निवासी हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में व्याप्त भयंकर गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

पिछले कुछ दिनों से हमारे मोहल्ले में सफाई कर्मचारी नहीं आ रहे हैं, जिसके कारण जगह-जगह कूड़े के ढेर लग गए हैं। नालियों का गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है, जिससे भयंकर बदबू आ रही है, जिसके कारण कॉलोनी में मक्खी-मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। इस स्थिति के कारण कॉलोनी में बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ गया है। साथ ही स्थानीय लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

अत: आपसे विनम्र निवेदन है कि जल्द से जल्द हमारी कॉलोनी में सफाई की समुचित व्यवस्था कराई जाए।

हम आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

राजदीप सिंह

शिवाजी नगर कॉलोनी,

झाँसी।

(क) मित्र को निमंत्रण पत्र

बसंत कुंज

40, बाजार मार्केट

कानपुर

दिनांक : 23/01/20--

प्रिय मित्र संजीव,

सादर नमस्कार,

तुम्हें यह जानकर बहुत खुशी होगी कि मेरे बड़े भाई राजीव का शुभविवाह 27/01/20-- को होना निश्चित हुआ है। बारात बस द्वारा प्रातः 4 बजे हमारे निज निवास से लखनऊ के लिए प्रस्थान करेगी। विवाह की इस शुभबेला पर तुम सपरिवार आमंत्रित हो। कृपया निश्चित तिथि से एक-दो दिन पूर्व आ जाना, जिससे हम सब मिलकर विवाह के उत्सव का भरपूर आनंद ले सकें। विवाह से संबंधित कार्यक्रम साथ में संलग्न है।

आपकी प्रतीक्षा में रहूँगा।

तुम्हारा मित्र

रमेश शर्मा

(ग) मित्र को बधाई-पत्र

प्रिय मित्र,

मोहन,

सप्रेम नमस्कार,

आशा करता हूँ कि तुम स्वस्थ और प्रसन्नचित्त होंगे। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि तुमने अपनी वार्षिक परीक्षा में सफल होकर एक नया कीर्तिपथ स्थापित किया है। तुम्हारी मेहनत और लगन प्रशंसनीय है। यह सफलता तुम्हारे आत्मविश्वास और परिश्रम का प्रमाण है।

तुम्हारी इस उपलब्धि ने सभी मित्रों और परिवार को गर्व का अनुभव कराया है। मुझे विश्वास है कि तुम आने वाले समय में और भी ऊँचाइयों को छुओगे और अपने सपनों को साकार करोगे। मैं हमेशा तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

घर में सभी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र

दिनेश

❊ ❊

22 कहानी लेखन

➡ आओ कुछ करें

(क) एक धोबी के पास एक गधा और एक कुत्ता था। गधा धोबी के कपड़े लेकर धोबीघाट तक जाता था, धोबी कपड़े धोकर वापस गधे पर लादकर घर वापस आता। कुत्ते का काम घर की रखवाली करना था। एक दिन की बात है धोबी कुत्ते को खाना देना भूल गया। इस बात पर कुत्ता बहुत नाराज हो गया।

संयोग की बात यह हुई कि उसी रात धोबी के घर चोर आ गया। धोबी और कुत्ते दोनों ने ही चोर को घर में घुसते हुए देख लिया। कुत्ता खाना न मिलने के कारण पहले से ही धोबी से नाराज था इसलिए वह चोर को देखकर भी नहीं भौंका। इस पर गधे ने कुत्ते से कहा 'अरे तुम भौंकते क्यों नहीं?'

गधे की बात सुनकर कुत्ते ने कहा 'मालिक तो हमें समय पर खाना भी नहीं देता। आज

मैं अगर नहीं भौंकूँगा तब उन्हें मेरी कद्र होगी।' गधे ने कहा 'तुम कैसे नाशुक्रे हो। तुम्हारा फर्ज है कि तुम अभी मालिक के काम आओ।' कुत्ता अड़ गया और नहीं भौंका। गधे ने सोचा, 'अब मुझे ही कुछ करना पड़ेगा। यदि मालिक जाग गया तो शायद मुझे कुछ इनाम मिल जाए।' यह सोचकर गधा जोर-जोर से रेंकने लगा।

धोबी दिनभर काम करके थका हुआ था। गधे की आवाज सुनकर उसकी नींद खुल गई और गधे पर बहुत गुस्सा आया। इधर गधे की आवाज सुनकर चोर खिड़की से कूदकर भाग गया। धोबी ने गुस्से में डंडा उठाया और गधे की पिटाई शुरू कर दी। गधे को पिटता देखकर कुत्ता मन ही मन हँस रहा था। धोबी गधे को पीटकर वापस सो गया।

गधे ने कुत्ते का काम किया और पिटाई खाई; इसीलिए कहते हैं जिसका काम उसी को साजे और करे तो डंडा बाजे....।

(ख) गंगा के किनारे जामुन के पेड़ पर एक बंदर रहता था। उस पेड़ के जामुन बहुत मीठे थे। एक दिन बंदर बड़े मजे से स्वादिष्ट जामुन खा रहा था कि एक मगरमच्छ गंगा से निकलकर तट पर आया। बंदर ने उसकी तरफ कुछ जामुन उछालते हुए कहा, ''ये दुनिया के सबसे मीठे जामुन हैं। वाह, क्या स्वाद है! अमृत है अमृत!'' मगरमच्छ ने जामुन चखकर देखे। वाकई जामुन कमाल के थे। बस उस दिन से बंदर और मगरमच्छ में दोस्ती हो गई। जामुन खाने और अपने मित्र बंदर से मिलने के लिए मगरमच्छ हर रोज आने लगा।

एक दिन घर लौटते समय मगरमच्छ कुछ जामुन अपनी पत्नी के लिए भी ले गया। जामुन खाते हुए पत्नी ने कहा, ''बहुत मीठे हैं। शहद भी इनके सामने फीका है। मजा आ गया। कहाँ से लाए?'' मगरमच्छ ने कहा, ''गंगा के किनारे के पेड़ से।'' ''तुम पेड़ पर तो चढ़ नहीं सकते। क्या तुम्हें यह जमीन पर पड़े मिले?'' मगरमच्छ की पत्नी ने कहा।

मगरमच्छ बोला, ''नहीं, एक बंदर मेरा दोस्त है। वह उसी पेड़ पर रहता है। वह मुझे जामुन देता है।'' वह बोली, ''अच्छा, अच्छा! तो इसीलिए तुम आजकल घर देर से आते हो। जो बंदर रोज इतने मीठे फल खाता है, उसका माँस कितना मीठा होगा! उसके कलेजे का तो कहना ही क्या! उसे खाते हुए मुझे कितना मजा आएगा!'' मगरमच्छ उसकी बात सुनकर चौंक गया। वह बोला, यह इच्छा व्यर्थ है। वह मेरा मित्र है। किंतु उसकी पत्नी बंदर का कलेजा खाने के लिए जिद पर अड़ गई। अंततः मगरमच्छ को बंदर को अपने साथ लाने के लिए जाना पड़ा।

गंगा किनारे पहुँचकर मगरमच्छ ने बंदर को आवाज लगाते हुए कहा, ''बंदर भाई, कहाँ हो, सो रहे हो क्या?'' अपने मित्र मगरमच्छ की आवाज सुनकर बंदर झटपट उसके पास आया और बोला, ''कहो मित्र, कैसे वापस आना हुआ? क्या भाभी जी के लिए और जामुन चाहिए?'' मगरमच्छ बोला, ''नहीं मित्र! आपकी भाभी ने आज आपको खाने पर निमंत्रण दिया है।'' बंदर बोला, ''मित्र! तुम तो जानते हो मैं पेड़ों पर रहता हूँ, मुझे नदी में तैरना नहीं आता।'' मगरमच्छ बोला, ''कोई नहीं मित्र, तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें ले चलूँगा।''

अपने घर ले चलता हूँ। बंदर कूदकर मगरमच्छ की पीठ पर जा बैठा। बीच नदी में

पहुँचते ही मगरमच्छ बोला, ''मित्र मेरी पत्नी का कहना है कि जो बंदर रोज इतने मीठे फल खाता है, उसका कलेजा कितना मीठा होगा! वह तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है। इसलिए मैं तुम्हें उसके पास ले जा रहा हूँ।'' यह सुनकर बंदर पहले तो भयभीत हुआ, परंतु जल्द ही उसने स्वयं को सँभालते हुए कहा, ''यदि ऐसी बात थी मित्र, तो तुम्हें मुझे पहले बताना चाहिए था। मैं तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आया हूँ। अत: तुम मुझे किनारे तक वापस ले चलो। मैं अपना कलेजा पेड़ से उतारकर तुम्हें दे दूँगा और तुम उसे ले जाकर भाभी को दे देना।'' बंदर की बात सुनकर मगरमच्छ पहले तो सोच में पड़ गया। फिर उसने सोचा, बंदर उसका मित्र है वह झूठ क्यों बोलेगा। ऐसा सोचकर मगरमच्छ बंदर को लेकर वापस नदी के किनारे आ गया। किनारे के निकट आते ही बंदर जल्दी से कूदकर पेड़ पर चढ़ गया और बोला, ''मूर्ख मगरमच्छ, कलेजा तो शरीर के अंदर होता है, उसे कोई भी बाहर नहीं रख सकता। अब जाओ यहाँ से, इसी पल से हमारी मित्रता समाप्त हुई।''

❊ ❊

23 संवाद लेखन

➡ आओ कुछ करें

1. राहुल : अरे अमन! आज तुम लोग घर के सामने वाली गली क्यों साफ कर रहे हो?

अमन : हाँ राहुल, हमारे घर के आस-पास बहुत गंदगी हो गई है। इसलिए आज हमने उसे साफ करने का जिम्मा स्वयं उठाया।

राहुल : सही कह रहे हो मित्र! घर के बाहर गंदगी से बीमारियाँ फैलती हैं और बदबू भी आती है। मैं भी ऐसा ही करूँगा। अपने आस-पड़ोस को साफ रखने का प्रयास करूँगा।

अमन : बिलकुल! मैंने गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग डालने की व्यवस्था की है। साथ ही, अब मैं पड़ोसियों को भी कूड़ा यहाँ-वहाँ न फेंकने के लिए कहूँगा।

राहुल : यह तो बहुत बढ़िया विचार है, अमन। अगर हम अपने घर के आस-पास सफाई रखेंगे तो हमारा वातावरण भी स्वस्थ और सुंदर रहेगा।

अमन : हाँ राहुल, स्वच्छता ही तो सेवा है! चलो अब सब मिलकर इसे अपनी आदत बनाते हैं।

2. संदीप : अरे मुकुल! क्या तुमने आज हिंदी के गुरुजी की कक्षा सुनी? वे कितनी गहराई से 'प्रेमचंद' की कहानी समझा रहे थे।

मुकुल : हाँ संदीप, सच में। पहले हिंदी मुझे उबाऊ विषय लगता था, किंतु गुरुजी के पढ़ाने का तरीका इतना सरल और रोचक है कि अब मैं उनकी एक भी कक्षा नहीं छोड़ता हूँ।

संदीप : बिल्कुल, व्याकरण के जटिल नियमों को भी वह इतनी आसान

भाषा में समझाते हैं कि रटने की जरूरत नहीं पड़ती। एक ही बार में याद हो जाते हैं।

मुकुल : गुरुजी न केवल पुस्तकीय ज्ञान अपितु हमें व्यावहारिक ज्ञान की बातें भी सिखलाते हैं।

संदीप : वास्तव में, ऐसे गुरु मिलना भाग्य की बात है। वे हिंदी के प्रति हमारे दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल चुके हैं।

3. अच्छे संवाद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

भाषा और शैली - भाषा सरल, सहज और पात्रानुकूल होनी चाहिए जिससे वह स्वाभाविक लगे।

पात्रानुकूलता - संवाद पात्र की उम्र, शिक्षा, स्वभाव और संबंध के अनुसार हों (जैसे - छोटे बच्चे और बड़े पात्र अलग-अलग भाषा में बोलेंगे)।

संक्षिप्तता और प्रवाह - संवाद छोटे, मुद्दे की बात करने वाले और प्रवाहपूर्ण होने चाहिए, जो कहानी या विषय को आगे बढ़ाएँ।

विषय केंद्रित - संवादों को विषय या मुद्दे पर केंद्रित होना चाहिए।

भावों की अभिव्यक्ति - हाव-भाव को कोष्ठक में (जैसे - मुस्कुराते हुए, क्रोध में) लिखना संवादों को जीवंत बनाता है।

रोचकता - रोचकता के लिए मुहावरों, लोकोक्तियों या हल्के व्यंग्य का प्रयोग किया जा सकता है।

विराम चिह्नों का प्रयोग - सही विराम चि□ों का प्रयोग अनिवार्य होता है।

4. नरेन्द्र : नमस्ते महेन्द्र! तुम सुबह-सुबह इतनी जल्दी कहाँ जा रहे हो?

महेन्द्र : नमस्ते राहुल! मैं योगाभ्यास करने जा रहा हूँ।

नरेन्द्र : योग? किंतु तुम पहले तो जिम जाते थे, अब योग क्यों?

महेन्द्र : जिम से केवल शरीर मजबूत होता है, लेकिन योग से शरीर में लचीलापन, मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ती है। छात्र जीवन में यह बहुत उपयोगी एवं लाभदायक है।

नरेन्द्र : क्या इससे पढ़ाई में मदद मिलती है?

महेन्द्र : हाँ! प्राणायाम और ध्यान से याददाश्त तेज होती है और एकाग्रता बढ़ती है।

नरेन्द्र : यह तो बहुत अच्छा है! फिर तो मैं भी कल से योग करना शुरू करूँगा।

महेन्द्र : कल से क्यों? आज से ही क्यों नहीं?

नरेन्द्र : सही कहा, मैं अभी तैयार होकर आया।

महेन्द्र : बहुत बढ़िया!

5. रिया : सर, आज आपने असेंबली में 'मेक इन इंडिया' के बारे में बताया था, क्या आप मुझे इसके बारे में विस्तार से बता सकते हैं?

अध्यापक : बिल्कुल रिया! 'मेक इन इंडिया' भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक बहुत ही महत्वपूर्ण अभियान है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत को विश्व का 'मैन्युफैक्चरिंग हब' बनाना है।

रिया : तो सर, क्या अब सारी चीजें भारत में ही बनेंगी?

अध्यापक : बिल्कुल, हमारा लक्ष्य है कि देश में निर्मित होने वाली वस्तुओं की संख्या बढ़े। इसमें विदेशी कंपनियों को भारत में आकर सामान बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इससे भारत आत्मनिर्भर बनता है और रोजगार के अवसर भी पैदा होते हैं।

रिया : अच्छा सर, मुझे याद आया। आपने कहा था कि इससे रोजगार भी बढ़ेगा।

अध्यापक : हाँ रिया, सही कहा। जब हमारे देश में कारखाने, उद्योग और मशीनें लगेंगी, तो हमारे लोगों को काम करने का अवसर मिलेगा। इससे बेरोजगारी कम होगी और युवा आत्मनिर्भर बनेंगे।

रिया : क्या इसका मतलब यह भी है कि हम अपनी तकनीक का उपयोग कर रहे हैं?

अध्यापक : सही समझा तुमने! यह 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा देता है। यानी हम जो वस्तुएँ बना रहे हैं, उनकी गुणवत्ता इतनी अच्छी हो कि वे पूरी दुनिया में बिक सकें। इससे 'मेड इन इंडिया' उत्पादों की धूम मचेगी।

रिया : सर, मैं समझ गई। यह हमारे देश की उन्नति के लिए बहुत जरूरी है।

अध्यापक : बिल्कुल सही! 'मेक इन इंडिया' का उद्देश्य ही है – भारत को सशक्त, समृद्ध और विकसित बनाना।

❊ ❊

24 अनुच्छेद लेखन

1. पर्यटन का महत्व

पर्यटन का अर्थ केवल घूमना नहीं, बल्कि अपने सामान्य निवास स्थान से दूर नई जगहों, संस्कृतियों और लोगों से रूबरू होना है। चूँकि मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु और घुमक्कड़ होता है, इसलिए उसे नई चीजें जानने की ललक रहती है।

पर्यटन से कई तरह के लाभ हैं। यह न केवल मनोरंजन और मानसिक शांति देता है, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत है, जो किताबों से नहीं मिल सकता। इसके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, खान-पान और रहन-सहन से परिचित होते हैं, जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ती है।

वर्तमान समय में पर्यटन एक उद्योग के रूप में भी स्थापित हो चुका है। यह न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित करने का साधन है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। पर्यटन से जुड़े होटल, परिवहन, गाइड और हस्तशिल्प जैसे व्यवसायों में लाखों लोगों को रोजगार मिलता है।

पर्यटन के बढ़ते महत्व को देखते हुए, विभिन्न

देशों की सरकारें इसे बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास कर रही हैं। इसमें बेहतर परिवहन सुविधाएँ, ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण और पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा के इंतजाम करना शामिल है।

अत: पर्यटन, ज्ञान, आनंद और आर्थिक विकास का एक सशक्त माध्यम है।

2. उपभोक्तावाद का जीवन पर प्रभाव

उपभोक्तावाद एक ऐसी विचारधारा है जो सुख और प्रतिष्ठा को केवल भौतिक वस्तुओं के उपभोग से जोड़ती है, जिससे जीवन 'दिखावे' पर केन्द्रित हो गया है। इसमें व्यक्ति अपनी जरूरतों से ज्यादा वस्तुओं को केवल इसलिए खरीदता है क्योंकि वह विज्ञापनों से प्रभावित है। यह एक दिखावा-प्रधान जीवनशैली है, जिसमें 'उपभोग' ही जीवन का मूल मंत्र बन गया है।

उपभोक्तावाद के कारण हैं- आकर्षक विज्ञापन, दिखावा संस्कृति, वैश्वीकरण, बाजारवाद और जीवनशैली में बदलाव - ये सभी उपभोक्तावाद के मुख्य कारण हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्प्रभाव- ये निम्नलिखित हैं - (i) सामाजिक दूरियाँ, (ii) पर्यावरणीय संकट, (iii) आर्थिक असमानता, (iv) शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य आदि।

नैतिक मूल्यों में ह्रास- उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण स्वार्थ, भ्रष्टाचार और परंपराओं का क्षरण जैसे अनैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिला है। परमार्थ, सदाचार, ईमानदारी और परंपराओं का विकास जैसे नैतिक मूल्यों में कमी आई है।

निष्कर्ष— आज का उपभोक्तावाद सामाजिक मर्यादाओं और स्थिरता को चुनौती दे रहा है। यह जीवन को दिखावे का गुलाम बना रहा है, जिसे रोकने के लिए संयमित उपभोग जरूरी है।

3. बाल श्रमिक

बाल श्रम एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक समस्या है, जो बच्चों के सुनहरे बचपन को छीनकर उन्हें गरीबी के कुचक्र में धकेलती है। यह उनके शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास को अवरुद्ध करती है। गरीबी के कारण लाखों बच्चे शिक्षा से वंचित होकर जबरन काम करने को मजबूर हैं।

श्रमिक के रूप में उनकी दिनचर्या—

- सुबह जल्दी उठकर कारखानों, ढाबों, चाय की दुकानों, खेतों या घरों में काम करने के लिए निकलना।
- उम्र से अधिक कठिन शारीरिक श्रम, जैसे ईंट-भट्टों पर भारी वजन उठाना या खतरनाक कारखानों में काम करना।
- घंटों काम करना, शिक्षा और खेलने के अवसरों से पूरी तरह वंचित रहना।
- पर्याप्त भोजन न मिलना और अस्वच्छ वातावरण में समय बिताना।

शोषण-

- कम उम्र और जागरूकता की कमी के कारण कम वेतन पर अधिक समय तक काम कराया जाता है।
- शारीरिक, मानसिक और कभी-कभी यौन शोषण का शिकार होना।
- जोखिम भरे कार्यों (जैसे— पटाखे, काँच उद्योग) में काम करने के कारण बीमारी और चोट का खतरा।
- उन्हें शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित रखा जाता है, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है।

प्रशासन के प्रयास- (i) बाल श्रम निषेध एवं विनियमन अधिनियम, 1986, (ii) संशोधित बाल श्रम अधिनियम, 2016 (iii) राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना (NCLP), (iv) अनिवार्य शिक्षा (RTE), (v) श्रम पोर्टल आदि।

समाधान- (i) गरीबी उन्मूलन, (ii) शिक्षा

की सुलभता, (iii) जागरूकता, (iv) कठोर कानून प्रवर्तन, (v) सामाजिक जिम्मेदारी आदि।

बाल श्रम के उन्मूलन के लिए सरकार के साथ-साथ समाज की सामूहिक भागीदारी अत्यंत आवश्यक है।

❊ ❊

25 चित्र वर्णन

1. चित्र में दो लड़के समुद्र तट पर सफाई कर रहे हैं। यह समुद्र तट पर सफाई अभियान को दर्शाता है। इसमें दो लड़के कूड़ा-कचरा इकट्ठा कर रहे हैं। एक लड़के के हाथ में थैला है जिसमें पुनर्चक्रण का निशान बना हुआ है, और दूसरा लड़का उसमें कचरा डाल रहा है। वे समुद्र तट को साफ रखने और पर्यावरण की रक्षा का संदेश दे रहे हैं।
2. यह एक बगीचे का चित्र है जिसमें कुछ बच्चे पौधे लगा रहे हैं—

   इस चित्र में तीन बच्चे एक बगीचे में पौधे लगाने की गतिविधि में व्यस्त हैं।
   - एक लड़का जमीन में पौधा लगा रहा है और दूसरा लड़का उसमें पानी डाल रहा है।
   - एक लड़की गमले में लगे पौधों की देखभाल कर रही है। उसके पास एक फल रखा हुआ है।
   - सभी बच्चे खुश दिख रहे हैं।

   पृष्ठभूमि में एक बड़ा पेड़, कुछ छोटे पौधे और बादल दिखाई दे रहे हैं।

❊ ❊

26 निबंध-लेखन

(क) देशाटन से लाभ

प्रस्तावना— शिक्षा के प्रसार ने लोगों में विश्व के अलग-अलग हिस्सों में जाकर वहाँ की जानकारी एकत्र करने की प्रबल इच्छा पैदा की है। नए अनुभव एवं ज्ञान प्राप्त करना तो कारण है ही, साथ ही हवाई परिवहन में प्रगति एवं पर्यटक सुविधाओं के विकास ने भी सीमाओं से बाहर निकलकर विचरण करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया है। विशेष रूप से दूरस्थ एवं पिछड़े क्षेत्रों में आर्थिक विकास तथा रोजगार सृजन के तंत्र के रूप में पर्यटन के महत्व को विश्व भर में पहचान मिली है। आज पर्यटन उद्योग सकल राजस्व के साथ-साथ विदेशी मुद्रा आय के मामले में सम्पूर्ण विश्व में एक वृहत सेवा उद्योग बन चुका है।

देशाटन की प्राचीनता— मनुष्य अति प्राचीनकाल से ही भ्रमणशील रहा है। पहले मनुष्य तीर्थों, व्यापार, ज्ञानार्जन के लिए अन्य देशों की यात्रा करते थे।

आधुनिक काल में देशाटन— प्राचीनकाल में देशाटन करना असुविधाजनक था, क्योंकि उस समय यातायात और आवागमन के साधन इतने सुलभ न थे। आधुनिक काल में वैज्ञानिक आविष्कारों ने विश्व की दूरी कम कर दी है। अब मनुष्य बड़े आनंद के साथ सारे विश्व की यात्रा कर सकता है।

देशाटन से लाभ— प्रत्येक मनुष्य को देशाटन का प्रेमी होना चाहिए इससे अनेक लाभ हैं –

(i) ज्ञान वृद्धि— देशाटन ज्ञान वृद्धि का बड़ा अच्छा साधन है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि किसी वस्तु का ठीक और पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि उसे स्वयं देखा जाए। देशाटन से किसी देश की जलवायु, स्थिति, पैदावार, उस स्थान के निवासियों का रहन-सहन, रीति-रिवाज, राजनैतिक परिस्थिति, आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक दशा आदि का सटीक ज्ञान प्राप्त होता है। देशाटन अनुभवों की खान है। जो व्यक्ति देशाटन करता है उसे अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। स्वावलंबन की भावना जाग्रत करने के लिए देशाटन बहुत आवश्यक है।

(ii) मनोरंजन— देशाटन से मनोरंजन भी होता है। अनेक प्रकार की वस्तुएँ देखने को मिलती हैं। कहीं अगाध सागर, तो कहीं सुंदर भवन देखने को मिलते हैं। कहीं कोई नया पशु देखने को मिलता है तो कहीं नया पक्षी। कहीं मनोरम झील की छटा दिखाई पड़ती है तो कहीं मनोरम सरोवर की शोभा। कहीं समुद्र का भव्य रूप देखा जाता है तो कहीं नदी की चाँदी सी उज्जवल धारा। कहीं हँसती हुई प्रकृति मन हर लेती है तो गगनचुंबी इमारत मन मोह लेती है। कहीं ग्रामीणों का सरल जीवन बड़ा अच्छा लगता है। कहीं नागरिकों की सजावट मन को आकृष्ट करती है।

(iii) स्वास्थ्य लाभ— देशाटन से स्वास्थ्य लाभ भी होता है। मनोरंजन और स्वास्थ्य का घनिष्ठ संबंध है। डॉक्टरों का मानना है कि यदि कोई मनुष्य सदैव प्रसन्न रहे तो उसे कभी कोई रोग नहीं हो सकता। वह सदैव स्वस्थ रहेगा। देशाटन से मनोरंजन होता है इसलिए देशाटन करने वाले व्यक्ति के स्वास्थ्य पर भी बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। मनोरंजन के अतिरिक्त कई स्थानों की जलवायु स्वास्थ्य को लाभ पहुँचाती है।

(iv) उन्नति— उन्नति के लिए देशाटन एक बड़ी आवश्यक वस्तु है। हम भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा करके अपनी सामाजिक, राजनैतिक और औद्योगिक उन्नति कर सकते हैं। दूसरे देशों की अच्छी समाज व्यवस्था का अध्ययन करके अपने देश में उसकी अवधारणा कर सकते हैं और अपनी कुरीतियों का अंत कर सकते हैं। देशाटन द्वारा ही दूसरे देशों के कला-कौशल का लाभ प्राप्त करके अपने देश में उससे औद्योगिक उन्नति कर सकते हैं।

उपसंहार— भारतीय पद्धति में देशाटन अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष सभी फलों का दाता है। ईश्वर की सौंदर्य सृष्टि में अनेक विचित्रताएँ हैं और इसका ज्ञान देशाटन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। अत: देशाटन जीवन का धर्म है। इसके बिना जीवन की सर्वांगीण उन्नति संभव नहीं है।

(ख) किसी आँखों देखे मेले का वर्णन

भारत त्यौहारों और मेलों का देश है। यहाँ पर हर रोज कोई न कोई मेला लगा ही रहता है। भारतीय लोगों में मेलों को लेकर बहुत उत्साह रहता है। वे मेले से दो दिन पूर्व ही मेले की तैयारियाँ करने लग जाते हैं। मेलों का सबसे ज्यादा उत्साह बच्चों में होता है क्योंकि वहाँ उनके मनपसंद खिलौने, खाद्य पदार्थ एवं झूले झूलने को मिलते हैं। मुझे भी मेले जाना बहुत पसंद है।

आज मैं उस मेले का वर्णन करूँगा जिसकी यादें आज भी मेरे मस्तिष्क पटल पर अंकित हैं। हमारे शहर में प्रतिवर्ष जन्माष्टमी के अवसर पर एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। यह मेला परेड मैदान में लगता है। इस मेले को देखने

के लिए सभी शहरवासियों के अलावा दूर-दराज के गाँवों के लोग भी आते हैं।

मैं भी जन्माष्टमी का यह मेला देखने के लिए बड़ा उत्सुक था। शाम 7 बजे मैं तैयार होकर अपने पिता के साथ मेला देखने चला गया। चारों ओर भीड़ थी, मुख्य मार्ग पर तो तिल रखने की जगह भी नहीं थी। सभी भगवान श्रीकृष्ण की भव्य झाँकियों को देखने में व्यस्त थे। मेले में आई भीड़ की खुशी का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। मेले में मिठाई, खिलौने, भेलपूरी, चाट-पकौड़ी तथा खाने-पीने की दुकानें सजी थीं, जिन्हें देखकर मेरे मुँह में भी पानी आ रहा था। परन्तु हमने पहले मेला देखने के बाद पेट-पूजा करने का निर्णय लिया। खिलौनों की दुकानें भी बच्चों को खूब आकर्षित कर रही थीं। सभी खिलौने एक से बढ़कर एक और बच्चों के मन मोह लेने वाले थे। गुब्बारे वाला बड़े-बड़े रंग-बिरंगे गुब्बारों से आकृतियाँ बनाकर बच्चों को लुभा रहा था। कुछ दुकानदार लाइटर, स्टोव जैसे घर-गृहस्थी का सामान बेच रहे थे।

मैदान के बीचों-बीच एक बड़ा मंच था जहाँ कि मेले का मुख्य आकर्षण था। इस मंच पर श्रीकृष्ण की जीवन लीला का मंचन किया जा रहा था। सभी लोग इस अद्‌भुत लीला को देखकर भाव-विभोर हो रहे थे। सचमुच यह मेला मेरे लिए यादगार था। मैंने व मेरे परिवार ने इस मंचन का भरपूर आनंद उठाया। यही वह पल था जब मेरे अंदर कृष्ण भक्ति का उदय हुआ। लीला देखने के बाद हमने झूला झूलने का निश्चय किया। मेले में बच्चों एवं बड़े सभी के लिए अलग-अलग झूले थे। झूलों के आगे लंबी-लंबी कतारें लगी हुई थीं। कुछ झूलों के आगे लिखा हुआ था- कृपया कमजोर दिल वाले इस झूले में न झूलें। मेरे परिवार ने इस झूले से दूर रहना ही उचित समझा और एक सामान्य झूले की टिकट खरीदी। इस झूले पर झूलना भी मेरे लिए डर और रोमांच का मिला-जुला अनुभव था।

अब बारी थी पेट-पूजा की। यदि मेले में कुछ नहीं खाया तो मेले का आनंद ही अधूरा है। इसलिए मेरे और मेरे परिवार ने एक डोसा वाले की दुकान पर गए। वहाँ हमने एक मसाला डोसा खाया और मीठे में गुलाब जामुन का आनंद लिया।

अंत में हमारे परिवार ने मेले से विदा ली। हम सभी बहुत खुश और उत्साहित थे। हमने मेले में जो देखा, जो सामान खरीदा उसकी बातें कर रहे थे। यह एक सुखद अनुभव था। मेला पीछे छूट गया पर मेले की यादें मेरे मन-मस्तिष्क पर अभी तक अंकित हैं।

(ग) किसी त्योहार का वर्णन

भारत त्यौहारों का देश है, यहाँ कई प्रकार के त्यौहार पूरे साल ही आते हैं। भारत में विविध धर्म के, विविध पक्ष के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। सभी के अलग-अलग त्योहार हैं। सभी त्यौहारों का अलग-अलग महत्त्व है। भारत एक पावन नगरी है। यहाँ के हर त्योहार मनोरंजन तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करने वाले होते हैं। परंतु इन सभी में से मुझे दीपावली का त्यौहार बहुत प्रिय है।

दीपावली भारत का सबसे प्रमुख और लोकप्रिय त्योहार है, जिसे 'दीपों का त्योहार' भी कहा जाता है। कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह पर्व बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। दीपावली के दिन भगवान श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने की खुशी में दीप जलाकर उनका स्वागत किया गया था। यह त्योहार सुख, समृद्धि और भाईचारे का संदेश देता है।

दीपावली से कई दिन पहले ही घरों, दुकानों और दफ्तरों की साफ-सफाई और रंग-रोगन का काम शुरू हो जाता है। लोग अपने घरों को रंग-बिरंगी लाइटों, दीयों और फूलों से सजाते हैं। बाजारों में रौनक बढ़ जाती है और मिठाइयों की खरीदारी खूब होती है।

दीपावली का त्योहार 5 दिनों का त्योहार है, जिसके पहले दिन धनतेरस होता है। धनतेरस के दिन लोग धातु की वस्तुएँ जैसे सोने और चाँदी के आभूषण खरीदते हैं। दूसरा दिन नरक चतुर्दशी या छोटी दीपावली के रूप में मनाया जाता है। तीसरे दिन मुख्य त्योहार मनाया जाता है। लोग बाजारों से लक्ष्मी-गणेश जी की मूर्तियाँ खरीदकर लाते हैं। रात में घर मिट्टी के दीयों, मोमबत्तियों और रंग-बिरंगी लाइटों से जगमगा उठते हैं। घर के आँगन में रंगोली बनाई जाती है। लोग नए कपड़े पहनते हैं। लक्ष्मी-गणेश की पूजा की जाती है और सभी अपने परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। मित्रों एवं रिश्तेदारों को मिठाइयाँ बाँटते हैं। बच्चे एवं बड़े आतिशबाजी और पटाखे जलाकर दीपावली का त्योहार मनाते हैं। चौथे दिन गोवर्धन महाराज की पूजा होती है। कहा जाता है इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर गोकुल वासियों की इंद्र के क्रोध से रक्षा की थी और इंद्र के घमंड को भी चूर-चूर किया था। अंतिम दिन भैयादूज के रूप में मनाया जाता है।

इस दिन बहनें अपने भाई को तिलक करती हैं और उनकी दीर्घायु की ईश्वर से कामना करती हैं। भाई भी अपनी बहनों की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं और उन्हें उपहार देते हैं।

दीपावली का त्योहार समाज में प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश देता है। यह हमें अंधकार, अज्ञान और बुराइयों को छोड़कर ज्ञान और अच्छाई की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। दीपावली खुशियों का त्योहार है जो जीवन को सकारात्मकता से भर देता है।

(घ) विद्यालय का वार्षिक उत्सव

विद्यालय का वार्षिक उत्सव एक विशेष अवसर होता है, जो पूरे विद्यालय परिवार के लिए खुशी और उत्साह का प्रतीक होता है। यह उत्सव न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर होता है, बल्कि विद्यालय की उपलब्धियों और सांस्कृतिक विरासत को भी मनाने का माध्यम होता है।

हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह कार्यक्रम विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा तैयार किया जाता है। इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक छात्र भाग लेते हैं। वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए छात्रों में बड़ा उत्साह होता है।

वार्षिकोत्सव विद्यालय के सभा भवन और खेल के मैदान में मनाया जाता है। सभा भवन को रंग-बिरंगी झंडियों से सजाया जाता है और दरवाजे पर रंग-बिरंगी लाइटें लगाई जाती हैं। वार्षिकोत्सव के पहले से ही तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं।

वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम शुरू होने के पहले सभी शिक्षक और विद्यार्थी सभा-भवन में अपनी-अपनी जगह बैठ जाते हैं। किसी गणमान्य व्यक्ति को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया जाता है।

वार्षिकोत्सव की शुरुआत में विद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना की जाती है। फिर प्रधानाचार्य के आग्रह पर मुख्य अतिथि दीपक जलाते हैं। प्रधानाचार्य महोदय मुख्य अतिथि का

परिचय देते हैं और विद्यालय की प्रगति के विषय में बताते हैं। इसके बाद विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ; जैसे— नृत्य, भाषण, गीत, ड्रामा, वाद-विवाद आदि कार्यक्रम होते हैं।

उत्सव के अंत में मुख्य अतिथि विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान करते हैं। इसके बाद कक्षा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले छात्रों को सम्मानित किया जाता है। सबसे अंत में विद्यालय के उप-प्रधानाचार्य, मुख्य अतिथि तथा अन्य लोगों को धन्यवाद देते हैं। फिर राष्ट्रीय गान के साथ वार्षिकोत्सव का समापन हो जाता है।

❊ ❊

आदर्श प्रश्न-पत्र-1

(पाठ□ 1 से 10 के आधार पर)

1. (क) (iv) बोली
   (ख) (ii) 14 सितम्बर

1. (क) परिवर्तन
   (ख) तीन
   (ग) बहुवचन
   (घ) संक्षिप्त

3. (क) छात्राएँ
   (ख) शिक्षकों
   (ग) पुस्तकें
   (घ) तितली

4. (क) पंजाबी (ii) गुरुमुखी
   (ख) हिंदी (i) देवनागरी
   (ग) उर्दू (iv) फारसी
   (घ) अंग्रेजी (iii) रोमन

5. (क) भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है।
   (ख) संधि के तीन भेद होते हैं
   (1) स्वर संधि,
   (2) व्यंजन संधि और
   (3) विसर्ग संधि।
   (ग) जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान नहीं होता है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

❊ ❊

आदर्श प्रश्न-पत्र-2

(पाठ□ 13 से 26 के आधार पर)

1. (क) (iii)
   (ख) (ii)

2. (क) आकाश— नभ, व्योम, गगन।
   (ख) कमल— पंकज, जलज, नीरज।
   (ग) नदी— सरिता, तटिनी, तरंगिणी।

3. (क) गायब हो जाना, छिप जाना।
   (ख) अत्यधिक अध्ययनशील व्यक्ति
   (ग) अत्यंत प्रिय, बहुत खास होना।

4. (क) (✓)
   (ख) (×)
   (ग) (✓)

5. **(क) मेरा प्रिय त्योहार**

भारत त्यौहारों का देश है, यहाँ कई प्रकार के त्यौहार पूरे साल ही आते हैं। भारत में विविध धर्म के, विविध पक्ष के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। सभी के अलग-अलग

त्योहार हैं। सभी त्यौहारों का अलग-अलग महत्त्व है। भारत एक पावन नगरी है। यहाँ के हर त्योहार मनोरंजन तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करने वाले होते हैं। परंतु इन सभी में से मुझे दीपावली का त्यौहार बहुत प्रिय है। दीपावली भारत का सबसे प्रमुख और लोकप्रिय त्योहार है, जिसे 'दीपों का त्योहार' भी कहा जाता है। कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह पर्व बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। दीपावली के दिन भगवान श्रीराम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने की खुशी में दीप जलाकर उनका स्वागत किया गया था। यह त्योहार सुख, समृद्धि और भाईचारे का संदेश देता है।

दीपावली से कई दिन पहले ही घरों, दुकानों और दफ्तरों की साफ-सफाई और रंग-रोगन का काम शुरू हो जाता है। लोग अपने घरों को रंग-बिरंगी लाइटों, दीयों और फूलों से सजाते हैं। बाजारों में रौनक बढ़ जाती है और मिठाइयों की खरीदारी खूब होती है।

दीपावली का त्योहार 5 दिनों का त्योहार है, जिसके पहले दिन धनतेरस होता है। धनतेरस के दिन लोग धातु की वस्तुएँ जैसे सोने और चाँदी के आभूषण खरीदते हैं। दूसरा दिन नरक चतुर्दशी या छोटी दीपावली के रूप में मनाया जाता है। तीसरे दिन मुख्य त्योहार मनाया जाता है। लोग बाजारों से लक्ष्मी-गणेश जी की मूर्तियाँ खरीदकर लाते हैं। रात में घर मिट्टी के दीयों, मोमबत्तियों और रंग-बिरंगी लाइटों से जगमगा उठते हैं। घर के आँगन में रंगोली बनाई जाती है। लोग नए कपड़े पहनते हैं। लक्ष्मी-गणेश की पूजा की जाती है और सभी अपने परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। मित्रों एवं रिश्तेदारों को मिठाइयाँ बाँटते हैं। बच्चे एवं बड़े आतिशबाजी और पटाखे जलाकर दीपावली का त्योहार मनाते हैं। चौथे दिन गोवर्धन महाराज की पूजा होती है। कहा जाता है इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर गोकुल वासियों की इंद्र के क्रोध से रक्षा की थी और इंद्र के घमंड को भी चूर-चूर किया था। अंतिम दिन भैयादूज के रूप में मनाया जाता है।

इस दिन बहनें अपने भाई को तिलक करती हैं और उनकी दीर्घायु की ईश्वर से कामना करती हैं। भाई भी अपनी बहनों की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं और उन्हें उपहार देते हैं।

दीपावली का त्योहार समाज में प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश देता है। यह हमें अंधकार, अज्ञान और बुराइयों को छोड़कर ज्ञान और अच्छाई की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। दीपावली खुशियों का त्योहार है जो जीवन को सकारात्मकता से भर देता है।

(ख) किसी आँखों देखे मेले का वर्णन

भारत त्यौहारों और मेलों का देश है। यहाँ पर हर रोज कोई न कोई मेला लगा ही रहता है। भारतीय लोगों में मेलों को लेकर बहुत उत्साह रहता है। वे मेले से दो दिन पूर्व ही मेले की तैयारियाँ करने लग जाते हैं। मेलों का सबसे ज्यादा उत्साह बच्चों में होता है क्योंकि वहाँ उनके मनपसंद खिलौने, खाद्य पदार्थ एवं झूले झूलने को मिलते हैं। मुझे भी मेले जाना बहुत पसंद है।

आज मैं उस मेले का वर्णन करूँगा जिसकी

यादें आज भी मेरे मस्तिष्क पटल पर अंकित हैं। हमारे शहर में प्रतिवर्ष जन्माष्टमी के अवसर पर एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। यह मेला परेड मैदान में लगता है। इस मेले को देखने के लिए सभी शहरवासियों के अलावा दूर-दराज के गाँवों के लोग भी आते हैं।

मैं भी जन्माष्टमी का यह मेला देखने के लिए बड़ा उत्सुक था। शाम 7 बजे मैं तैयार होकर अपने पिता के साथ मेला देखने चला गया। चारों ओर भीड़ थी, मुख्य मार्ग पर तो तिल रखने की जगह भी नहीं थी। सभी भगवान श्रीकृष्ण की भव्य झाँकियों को देखने में व्यस्त थे। मेले में आई भीड़ की खुशी का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। मेले में मिठाई, खिलौने, भेलपूरी, चाट-पकौड़ी तथा खाने-पीने की दुकानें सजी थीं, जिन्हें देखकर मेरे मुँह में भी पानी आ रहा था। परन्तु हमने पहले मेला देखने के बाद पेट-पूजा करने का निर्णय लिया। खिलौनों की दुकानें भी बच्चों को खूब आकर्षित कर रही थीं। सभी खिलौने एक से बढ़कर एक और बच्चों के मन मोह लेने वाले थे। गुब्बारे वाला बड़े-बड़े रंग-बिरंगे गुब्बारों से आकृतियाँ बनाकर बच्चों को लुभा रहा था। कुछ दुकानदार लाइटर, स्टोव जैसे घर-गृहस्थी का सामान बेच रहे थे।

मैदान के बीचों-बीच एक बड़ा मंच था जहाँ कि मेले का मुख्य आकर्षण था। इस मंच पर श्रीकृष्ण की जीवन लीला का मंचन किया जा रहा था। सभी लोग इस अद्भुत लीला को देखकर भाव-विभोर हो रहे थे। सचमुच यह मेला मेरे लिए यादगार था। मैंने व मेरे परिवार ने इस मंचन का भरपूर आनंद उठाया। यही वह पल था जब मेरे अंदर कृष्ण भक्ति का उदय हुआ। लीला देखने के बाद हमने झूला झूलने का निश्चय किया। मेले में बच्चों एवं बड़े सभी के लिए अलग-अलग झूले थे। झूलों के आगे लंबी-लंबी कतारें लगी हुई थीं। कुछ झूलों के आगे लिखा हुआ था- कृपया कमजोर दिल वाले इस झूले में न झूलें। मेरे परिवार ने इस झूले से दूर रहना ही उचित समझा और एक सामान्य झूले की टिकट खरीदी। इस झूले पर झूलना भी मेरे लिए डर और रोमांच का मिला-जुला अनुभव था।

अब बारी थी पेट-पूजा की। यदि मेले में कुछ नहीं खाया तो मेले का आनंद ही अधूरा है। इसलिए मेरे और मेरे परिवार ने एक डोसा वाले की दुकान पर गए। वहाँ हमने एक मसाला डोसा खाया और मीठे में गुलाब जामुन का आनंद लिया।

अंत में हमारे परिवार ने मेले से विदा ली। हम सभी बहुत खुश और उत्साहित थे। हमने मेले में जो देखा, जो सामान खरीदा उसकी बातें कर रहे थे। यह एक सुखद अनुभव था। मेला पीछे छूट गया पर मेले की यादें मेरे मन-मस्तिष्क पर अभी तक अंकित हैं।

(ग) क्रिकेट मैच का वर्णन

किन्हीं दो टीमों के बीच होने वाला क्रिकेट मैच हमेशा रोमांच और उत्साह से भरा होता है। पिछले रविवार मुझे अपने शहर के स्टेडियम में भारत और अश्वस्ट्रेलिया के बीच एक मैच देखने का अवसर मिला।

मैच शुरू होने से पहले ही चारों तरफ दर्शकों की भारी भीड़ थी। अंपायरों के मैदान पर

आते ही खेल शुरू हुआ। भारत ने टॉस जीता और पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। भारतीय बल्लेबाजों ने शानदार शुरुआत की और चौकों-छक्कों की बरसात कर दी। जब भी कोई खिलाड़ी बाउंड्री मारता, पूरा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठता।

खेल के दूसरे हिस्से में विपक्षी टीम ने लक्ष्य का पीछा करना शुरू किया। हमारे गेंदबाजों ने सधी हुई गेंदबाजी की। मैच अंतिम समय बहुत रोमांचक था, क्योंकि आखिरी ओवर में जीत के लिए 15 रनों की जरूरत थी। दर्शक अपनी सीटों से खड़े हो गये और सबकी साँसें थमी हुई थीं। अंत में, भारतीय गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया और विपक्षी टीम लक्ष्य से पीछे रह गई।

भारत ने यह मैच जीत लिया। खिलाड़ियों ने एक-दूसरे को गले लगाया और दर्शकों ने तिरंगा लहराकर अपनी खुशी जाहिर की। यह मैच न केवल मनोरंजन से भरपूर था, बल्कि इससे हमें टीम भावना और अंततः हार न मानने की सीख भी मिली। वह दिन मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया।

(घ) महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी जी भारत के एक महान नेता थे। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर गाँव में हुआ था। महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था और उनके पिता का नाम करमचंद गाँधी और माता का नाम पुतलीबाई था।

गाँधी जी का विवाह 15 वर्ष की आयु में ही हो गया था। हम गाँधी जी को बापू और राष्ट्रपिता भी कहते हैं। गाँधी जी ने बैरिस्टर बनने के लिए लंदन से कानून की पढ़ाई की। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' यह बापू का नारा था लेकिन बापू हिंसा के खिलाफ थे। आजादी में बापू के योगदान के कारण उन्हें राष्ट्रपिता का ओहदा दिया गया है। बापू साधारण जीवन जीना पसंद करते थे। वह चरखा चलाकर सूत बनाते थे और उसी से बनी धोती पहना करते थे। गाँधी जी की मृत्यु 30 जनवरी 1948 को हुई थी। नई दिल्ली के राजघाट पर उनकी समाधि आज भी स्थित है।